E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

नव उपनिवेशवाद के संदर्भ में उदय प्रकाश की चयनित कहानियों का भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषणात्मक अध्ययन

*घनश्याम चौधरी, **डॉ. आशा अग्रवाल

*शोधार्थी, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

**निर्देशक, प्राध्यापक (हिन्दी विभाग)श्री अटल बिहारी वाजपेयी शा. कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.12510310

सारांश :

नव उपनिवेशवाद के बीज साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद में निहित हैं। आज नव उपनिवेशवाद का असर सब कहीं है। इससे छुटकारा पाना आसान काम नहीं है। उदय प्रकाश की कहानियों ने सोद्देश्यता के कारण अपनी पृथक पहचान बनाई हुई है। उनकी कहानियों में नव उपनिवेशवाद के परिदृश्य को देख सकते हैं। समाज के बदलते परिवेश, भूमण्डलीकरण बाजारीकरण का यथार्थ चित्रण उनकी कहानियों में उपयुक्त रूप से किया गया है। चयनित कहानी 'पीली छतरी वाली लड़की' एवं 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में उत्तर औपनिवेशिक इतिहास, बाजारवाद, मानवीय अस्तित्व का संकट और नैतिक पतन आदि को सफल व प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया गया है।

बीज शब्द : उपनिवेशवाद, नव उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, पूंजी, नैतिक पतन, मानवीय अस्तित्व, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ।

1. परिचय :

उदय प्रकाश का जन्म छत्तीसगढ़ के 'सीतापुर' नामक गांव में 1 जनवरी 1952 को वर्षारम्भ में हुआ। उदय प्रकाश ने अपने जीवनानुभवों से अपने अनूठे साहित्य सृजन द्वारा पाठकों व समीक्षकों को अनुभूत कर अमिट सकारात्मक छवि निर्मित की है। उनके साहित्य की अद्भुत सर्जना का असर लोगों के हृदयों की पुस्तक पर अनेक वर्षों तक लिखा रहेगा। वैसे उनकी साहित्यिक यात्रा 'कविता लेखन' से प्रारम्भ हुई, जिसमें 'सुनो कारीगर', 'रात में हारमोनियम', 'अबूतर–कबूतर', 'एक भाषा हुआ करती है' हृदय को मथ देती है। उनके प्रकाशित कथा संग्रहों में 'दरियाई घोड़ा', 'तिरिछ', 'मैंगोसिल', और अंत में प्रार्थना', 'पॉल गोमरा

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

का स्कूटर', 'दत्तात्रेय के दुःखः', 'अरेबा–परेबा', 'पीली छतरी वाली लड़की' और 'मोहनदास' आदि प्रसिद्ध हैं। उदय प्रकाश ने कविता और कहानियों के अलावा निबंध, आलोचना और अनुवाद गद्य विधाओं में भी अपना लेखन कार्य सफल रूप से किया है। लेखन कार्य के पहले वे पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपने कदम रख चुके थे मगर वे स्वयं को पहले 'कवि' ही मानते हैं। उनका कथन है – ''मैं मूलतः कवि हूँ, मुझे कहानीकार मानना कुछ और वैसा ही है कि कुम्हार भी कपड़ा सिल दे और उसे दर्जी समझ लिया जाये। [1] परन्तु ये भी उल्लेखनीय है कि उदय प्रकाश को कहानी लेखन में सर्वाधिक लोकप्रियता और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। उनकी 'मोहनदास' कहानी का विश्व की तेरह भाषाओं में अनुवाद किया गया है तथा इसी कहानी पर ही उदय प्रकाश को सन् 2010 में साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

प्रस्तुत शोध पत्र में नव उपनिवेशवाद के संदर्भ में उदय प्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की' तथा 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानियों का अध्ययन भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रतिरोध के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत तक पूरी दुनिया पर ब्रिटिश साम्राज्य का शासन काल था। भारत भी सन् 1947 तक ब्रिटेन के अधीन था। भारत राजनैतिक, आर्थिक और मानसिक स्तर पर ब्रिटेन का गुलाम था। सन् 1947 के बाद यह उपनिवेशवाद और आगे बढ़ा। पुराना उपनिवेशवाद आज नया रूप धारण करके हमारे समक्ष खड़ा है। उपनिवेश का काल मुख्य रूप से प्रायः 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 20वीं शताब्दी तक रहा। यूरोपीय ताकतों से पश्चिमी संस्कृति द्वारा दूसरे कमजोर देशों पर कब्जा करके वहाँ की भाषा, धर्म, पर्यावरण, जीवन शैली, प्रशासन, राजकाज और जीवन पर अपने विचारों को थोपने की दीर्घकालीन प्रक्रिया को ही नव उपनिवेशवाद कहा जाता है। यूरोप में औद्योगिक क्रान्ति ने भौतिक समृद्धि में अभूतपूर्व विस्तार किया। उत्पादन में हुई अभिवृद्धि ने नये बाजार की खोज को भी अनिवार्य बनाया था। उपनिवेशवाद का नया रूप है 'नव–उपनिवेशवाद', यह साम्राज्यवाद से भी घातक है। इसका जन्म द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हुआ था। उपनिवेशवाद में शोषण मूर्त था और नव उपनिवेशवाद में शोषण अमूर्त हो गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं :

- **उद्देश्य :**
  1. नव उपनिवेशवाद की संकल्पना संक्षिप्त में स्पष्ट करना।
  2. नव–उपनिवेशवाद के अन्तर्गत भूमंडलीकरण और बाजारवाद को परिभाषित करना।
  3. उदय प्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की' और 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद का प्रतिरोध का विश्लेषण करना।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

4. नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के प्रतिरोध का चयनित कहानियों में मूल्यांकन का निष्कर्ष प्रदान करना।

- **परिकल्पना :**

उदय प्रकाश की चयनित कहानियों 'पीली छतरी वाली लड़की' तथा 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में नव–उपनिवेशवाद से संदर्भित भूमण्डलीकरण तथा बाजारवाद के प्रतिरोध के स्वर मुखर पाये जायेंगे।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया।

- **नव–उपनिवेशवाद की संक्षिप्त संकल्पना :**

वर्तमान युग में किसी देश पर राजनैतिक अधिकार प्राप्त करना संभव नहीं है। आज ये विकसित और शक्तिशाली देश अपनी आर्थिक और सैन्य शक्ति द्वारा कमजोर देशों को अपनी शर्तें मानने को बाध्य करते हैं। इस अवस्था को नव–उपनिवेशवाद के नाम से जाना जाता है। आधुनिक युग में विचार करने पर ज्ञात होता है कि भूमण्डलीकरण के नाम पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बढ़ता हुआ आर्थिक प्रभाव, उदारीकरण के द्वारा होने वाला बाजारों का विस्तार अन्य कूटनीतिक चालें वास्तव में नव–उपनिवेशवाद के विभिन्न रूप है।

नव–उपनिवेशवाद को परिभाषित करते हुए शैलेन्द्र सेंगर ने लिखा है– ''इसके अन्तर्गत विकसित देश विकासशील देशों में पूंजी का निवेश। प्रवाह, करके उनके कच्चे माल को ले लेते हैं तथा विकासशील देशों को ही बाजार के रूप में इस्तेमाल करते हैं। विकसित देशों द्वारा किया गया पूंजी प्रवाह विकासशील देशों के कच्चे माल की उपयुक्त कीमत नहीं चुकाता है अर्थात् पूंजी प्रवाह कच्चे माल को दोहन की अपेक्षा कम होता है। [2]

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में नव–उपनिवेशवाद की प्रमुख प्रवृत्ति थी। 'विश्व में पूंजीवादी प्रणाली को सुरक्षित रखना'। इसे तीन रूपों में देखा जा सकता है – आर्थिक, राजनैतिक और सैनिक।

- **भूमण्डलीकरण का अर्थ और परिभाषा :**

यह एक अवधारणा है। इसका सम्बन्ध वाणिज्य और व्यापार से है। संचार, प्रौद्योगिकी और पूंजी के क्षेत्र से आया हुआ शब्द है।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

एंथेनी गिडेंस के अनुसार – (दि कान्सीक्यूज़ेस ऑफ मॉडरनिटी) विभिन्न लोगों और दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों के बीच में बढ़ती हुई अन्योन्याश्रित या पारस्परिकता ही भूमण्डलीकरण है। यह पारस्परिकता सामाजिक और आर्थिक सम्बन्धों में होती है। इसमें समय और स्थान सिमट जाते हैं। [3]

भूमण्डलीकरण के मूल में है पूंजी। यह समाज और संस्कृति को एक मंच पर लाने का प्रयास करती है। यह राजनीति और अर्थनीति मल्टी नेशनल कम्पनियों से संचालित है। इसकी धनलोलुपता सभ्यता संस्कृति को दूषित कर रही है। साथ ही जीवन मूल्य भी विघटित होते जा रहे हैं।

- **बाजारवाद का अर्थ और परिभाषा :**

साम्राज्यवाद का आर्थिक संस्करण ही बाजारवाद है। यह विज्ञापनों के बल पर युवा पीढ़ी पर मीठा असर डालता है। सुविधाओं के लिये उन्हें विवश करता है। इसके परिणामस्वरूप हमने तत्काल में जीवन सीखा है। बाजार का असर आज हर कहीं है। यह भूमण्डलीकरण के साथ आया है। वास्तव में बाजारवाद उत्तेजना की अटूट लहरों पर प्रवाहित है। वह अधिक से अधिक सुख भोगने की उत्तेजना पर आधारित है।

अखिलेश के अनुसार : ''आज बाजार हमारे घर में है। हमारे जेहन– वजूद हर जगह बाजार है। बाजार सर्वव्याप्त है। इसके लिये कहीं जाने की जरूरत नहीं है। दुःख, सुख, धर्म, संस्कृति, उत्सव इसने हर जगह पैर पसार लिये हैं। [4]

- **नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में उदय प्रकाश की चयनित कहानियों 'पीली छतरी वाली लड़की' और 'पॉल गोमरा का स्कूटर' में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद का विरोध :**

नव–उपनिवेशवाद वास्तव में विकासशील व्यवस्था का अद्‌भुत संचालक बनकर हमारे समक्ष उभरा है। उदय प्रकाश की कहानियों की रचनात्मक ऊर्जा में निजीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, विज्ञापनवाद, भूमण्डलीकरण और बहुराष्ट्रीय आदि तत्व देखे जा सकते हैं। वे अपनी कहानियों के माध्यम से यह बताने का सार्थक प्रयत्न करते हैं कि भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का क्रूर व्यवहार व्यवहार बढ़ गया है। साथ ही हमारी भारतीय जनता या देश पुनः उपनिवेश बनता जा रहा है। आज यह स्थिति है कि मानव की हमारी गतिविधियाँ और प्रवृत्तियाँ बाजार के ही नियंत्रण में है। बाजारवाद और भूमण्डलीकरण के कारण सभी प्रकार सुविधाएं गाँवों और नगरों में जा रही है। वह किसी हद तक उचित है पर उसके दुष्प्रभाव भी देख जा सकते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

- **'पीली छतरी वाली लड़की' –**

उदय प्रकाश द्वारा कहानी में बाजार की ब्रॉंडिंग की बात कहते हैं। इस कहानी के कथानक के माध्यम से कहानीकार ने यह दर्शाया है कि भूमण्डलीकरण और बाजारवाद के कारण भविष्यहीनता फैल रही है। शांति और हँसी के स्थान पर केवल शोर है। पूंजी और बाजार का यथार्थ चित्रण इस कहानी में है। इसमें एक सुनहरी प्रेम कथा का भी चित्रण है। पूंजी, बाजार, जातिवाद आदि के साथ राहुल और अंजलि की प्रेम कथा भी है। इनका प्रेम यथार्थ है, लेकिन दुनिया इस प्रेम को संदेह से देखती है। उसके लिये समाज, जातीयता, राजनैतिक दृष्टिकोण, सामाजिक परिवेश सब विपरीत है। उदय प्रकाश इस कहानी में सच्चे प्रेम में आने वाले प्रतिरोध से बाजारवाद के रूप में दर्शाते हैं।

- **'पॉल गोमरा का स्कूटर' –**

इस कहानी में उदय प्रकाश नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में बताते हैं कि वह पूंजीवाद द्वारा व्यक्त किया गया एक नवीन दार्शनिक विकल्प है। इसकी प्रवृत्तियों ने भारतीय समाज की जनता को उसकी की शक्ति का अनुभव करा दिया है। इस कहानी में भी मानव के अमानुषिक परिणति का दृश्य समझाने का यत्न किया गया है। कहानी के मुख्य पात्र 'पॉल गोमरा' के माध्यम से समाज में होने वाले बाजारवादी युग की अमानवीयता का चित्र प्रस्तुत किया गया है। उदय प्रकाश इस कहानी में बताते हैं कि ''लोगों की स्मृति उस कैसेट की तरह थी, जिसमें हर रोज नई छवियाँ और नई आवाजें टेप की जाती है और रात में उन्हें पोंछ दिया जाता। सुबह वे सब स्मृतिहीन होकर उठते हैं। उन्हें पिछला कुछ याद नहीं रहता।**[5]** यह स्मृतिहीनता साम्राज्यवाद का हथियार है। वास्तव में यहाँ लोगों को स्मृतिहीन बनाकर उन्हें अपना उपनिवेश बनाना आसान है।

बाजारवाद का प्रभाव इस कहानी में कहा जाये तो ''बाजार अब सभी चीजों का विकल्प बन चुका था। शहर, गाँव, कस्बे बड़े तेजी से बाजार में बदल रहे थे। हर घर दुकान में तब्दील हो रहा था। बाप अपने बेटे को इसलिये घर से भगा रहा था कि वह बाजार में कहीं फिट नहीं हो रहा था। पत्नियाँ अपने पति को इसलिये छोड़कर भाग रहीं थीं क्योंकि बाजार में उनके पतियों की कोई खास माँग नहीं थी। औरत कमाऊ और मर्द बिकाऊ का यकायक युग आ गया था। [6]

2. निष्कर्ष :

नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में बाजारवाद, भूमंडलीकरण के परिणाम स्वरूप समाज में अकेलापन भी बढ़ गया है। बाजारीकरण से लोगों की मनोस्थिति पर भी भारी बदलाव आ गया है। उदय प्रकाश की कहानियों में भूमण्डलीकरण जनित आर्थिक परतंत्रता और बाजारवादी शक्तियों की कार्यवाहियों का संकेत मिलता है। यह शक्तियाँ मानव जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं और

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

उनसे कैसे मुक्ति प्राप्त करता है, ये सब उनकी कहानियों में उदय प्रकाश पात्रों के माध्यम से समझाते हैं। भूमण्डलीकरण से उत्पन्न पूंजीवादी व्यवस्था ने लोगों के जीवन को अपने अधीन कर दिया है। बाजार आम आदमी को भी अपनी गिरफ्त में ले लेता है।

'पीली छतरी वाली लड़की' कहानी में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि हमारी परम्परागत रीति–रिवाज, देशीय परम्पराएँ, जीवन आदि बाजारीकृत संस्कृति से विकृत हो रही हैं। मानव की प्रति अति सुख लोलुपता के कारण परिस्थिति संतुलन, खेत, जंगल, पेड़–पौधे आदि सब नष्ट हो रहे हैं। हवा, नदी, नाले दूषित होते जा रहे हैं।

'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी में उदय प्रकाश ने इतिहास, विचार आदि का अंत, परम्परा का लोप और नव–उपनिवेशवादी अभिलक्षणों का चित्रण भी किया है। इन कहानियों के माध्यम से स्पष्ट होता है कि भाग–दौड़ के इस नव–उपनिवेशवादी युग में मानवीय रिश्ते स्वार्थ में बदल रहे हैं, यानि हिंसक प्रवृत्तियाँ उभर रही हैं। उदय प्रकाश ने संस्कृति को धर्म का पर्याय बताकर प्रस्तुत किया है। वे इन कहानियों में भूमण्डलीकरण और बाजारवाद का प्रतिरोध करते हैं।

निष्कर्षात्मक तौर पर कह सकते हैं कि नई सदी में प्रविष्ट कहानीकार उदय प्रकाश ने अपनी कहानियों ने नव–उपनिवेशवाद को बखूबी उकेरा है। उनका समय नव–उपनिवेशवाद की परिस्थितियों का साक्षी है, जिसको उन्होंने पहचाना और अपनी कहानियों में प्रतिरोध के मुखर स्वर देकर प्रस्तुत किया है। वे जानते हैं कि नव–उपनिवेशवाद के संदर्भ में बाजार की ताकत प्रबल होती है इसलिये वे अपनी कहानियों में उनका प्रतिरोध करने वाले पात्रों की सृष्टि करते हैं।

उदय प्रकाश की कहानियों के पात्र उनके ही समान ऐसे हैं जो जिन्होंने बाजार और भूण्डलीकरण के आगे घुटने नहीं टेके। इन चयनित कहानियों के माध्यम से वे शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद करते हैं। नव–उपनिवेशवाद का विरोध कर शोषण रहित समाज की नई व्यवस्था ही उनका लक्ष्य है।

3. संदर्भ :

1. शिंदे, प्रकाश भगवान राव, उदय प्रकाश के कथा साहित्य का अनुशीलन (शोध पत्र) प्दकपंद ैजतमंउे त्मेमंतबी श्रवनतदंसए टवसनउम.2ए प्नम.10ए छवअण 2012ण
2. सेंगर शैलेन्द्र, राजनीति के सिद्धांत, खण्ड–2, पृ.सं.–709
3. दोशी, एस.एल. आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, पृ.सं.–326
4. दोशी, एस.एल. आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नव समाजशास्त्रीय सिद्धांत, पृ.सं.–322

E-ISSN No: 2456-6713

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

Impact Factor: 5.924

5. उदय प्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर, पृ.सं.–19
6. वही....., पृ.सं.–36

4. संदर्भ ग्रंथ :

1. उदय प्रकाश, पॉल गोमरा का स्कूटर
2. उदय प्रकाश, दस प्रतिनिधि कहानियाँ
3. के.एन. पणिक्कर, औपनिवेशिक भारत में सांस्कृतिक और विचारात्मक संघर्ष
4. अभय कुमार एवं भारत का भूमण्डलीकरण
5. उदय प्रकाश, उत्तर आधुनिकता उपभोक्तावाद